Tkkfr 0;oLFkk vkSj vaxzsth lRrk ds fo#/n rhoz vkanksyu ds uk;d *Qdhjk

Mk- je”k lkHkkth dqjs
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
नारायणराव वाघमारे महाविद्यालय, आखाडा बालापुर,जि. हिंगोली महाराश्ट्र

'पृथ्वी भोशनाग के फन पर आश्रित न होकर मजदूरों के हाथों पर आधारित है', ऐसा कहकर बरसों से चले आ रहे धार्मिक मिथक को मजदूरों की मेहनत के साथ जोडनेवाले साहित्यरत्न, लोक” ााहीर अण्णा भाऊ साठे एक वि” वस्तरीय साहित्यकार हैं। केवल साहित्य साधना ही नहीं तो प्रत्यक्ष व्यवस्था और सरकार के खिलाफ तन–मन वाणी और लेखनी के द्वारा आंदोलन में हिस्सा लेनेवाले आंदोलनकारी क्रांतिकार भी है। हर प्रकार के अन्याय–अत्याचार के विरुध्द बगावत यह उनका स्थायी भाव है। इसलिए अंग्रेज सरकार के खिलाफ हो रहे जबरदस्त आंदोलन में नाना पाटील जैसे क्रांतिकारियों का सक्रिय सहयोग दिया। 1947 में जब दे” ा आज़ाद हुआ तब सारा दे” ा ज” न मना रहा था लेकिन अण्णा सरकार से पुछ रहे थे कि, 'आजादी किसको मिली? पुंजीपतियों को या जन सामान्य को?' ''अन्याय अत्याचार के खिलाफ उनकी कलम आग उगलती थी, लोक नाटिका के माध्यम से उन्होंने सोये हुए समाज को जगाने का काम किया। अगर यह कहा जाय कि संयुक्त महाराश्ट्र के आंदोलन में उनकी कलम तथा वाणी ने जान फूंकी तो गलत नहीं होगा।''[01]

v..kk HkkÅ vkSj lkfgR;%& बहुमुखी प्रतिभा के धनी अण्णा भाऊ साठे ने कई विधाओं का सृजन कर मराठी साहित्यवि” व में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 20 कहानी संग्रह, 12 लोकनाटय, एक यात्रा वृतांत, 10 लोकप्रिय पोवाडे, के साथ 30 उपन्यास यह अण्णा की साहित्य संपदा है। उनके उपन्यासों का कथानक इतना प्रवाही और प्रभावी है कि उनपर आठ फिल्मों का निर्माण भी हुआ है। केवल दे” ा ही नही तो विदे” ाी में भी उनके साहित्य का प्रभाव उतना ही गहरा दिखाई देता है। र” ायन, फ्रेंच, अंग्रेजी, जर्मनी, पोलंड आदि विदे” ाी तो हिंदी, गुजराती, बंगाली, तामिल, मलियाली, उडिसा आदि दे” ा–विदे” ा 27 भाशाओं में उनके साहित्य का अनुवाद होना ही उनके साहित्य की स्तरीयता महत्ता सिध्द करता है। रुस में उनके साहित्य को बहुत पसंद किया इसके चलते इंडो–सोवियत कल्चर सोसायटी की ओर से उन्हे रुस आने का निमंत्रण भी मिला।

***Qdhjk* %&** भारतीय समाज व्यवस्था में परंपरा से चली आ रही जाति व्यवस्था और अंग्रेजी सत्ता के अन्याय–अत्याचार के खिलाफ तीव्र आंदोलन करनेवाला आग की ज्वाला बागी जननायक 'फकीरा' के जीवन पर आधारित उपन्यास को अण्णा के साहित्य में सबसे अधिक प्रसिध्दी मिली। जिस समाज व्यवस्था ने अस्पृ” यता निर्माण की वंचितों को अपराधिक और अपमानजनक व्यवसाय करने को मजबूर

किया। अपराधिक जनजाति अधिनियम लगवाकर सामंतवादी भाक्तियों के अधिन कर उनका सुख–चैन छिन लिया। अन्न के दाने–दाने के लिए तड़फाकर उनका भोशण किया। उस व्यवस्था और सत्ता के खिलाफ पिता राणूजी दौलती मांग के पुत्र फकीरा राणूजी मांग की यह संवेदन" ील, करुण और रक्तरांजित साहस कथा है। जिसपर अण्णा भाऊ के अनेक राश्ट्रीय अंतराश्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

jk.kkth dk lkgl%& इस उपन्यास की कथावस्तु महाराश्ट्र राज्य की वारणा नदी के क्षेत्र में बसे छोटे से देहात वाटेगांव की है। इस देहात के गरीब, पीडित, भोशित मांग समाज के साहसी बाप–बेटे की कहानी है। गाँव के मांग बस्ती के पुरुशों पर सनद" ाीर ि" ापाई के नाते गाँव की रक्षा की जिम्मेदारी थी। लेकिन आर्थिक स्थिती ऐसी की उन्हे अकाल और बरसात के दिनों में कई बार भूखा रहना पडता। जिने के लिए आडोस–पडोस के खेत–खलिहानों में चोरी कर अपना पेट पालना पडता। पेट में भूख और हाथ में तलवार यह विरोधाभासी जिंदगी मांग बस्ती के लिए भााप के समान थी। गाँव के पुलिस पाटिल भांकरराव को अपने गाँव में कोई साहसी पुरुश हो जो पडोसी ि" ागांव की जोगणी (धार्मिक उत्सव) भगाकर अपने गाँव लाकर गाँव में धार्मिक मेला लगाएँ, गाँव का लौकिक बढ़ाएँ और गाँव का विकास करे ऐसा लगता है। यह बात भोरदिल राणोजी के मन को खाने लगती है। दूसरे गाँव की जोगणी भगाने से गाँव की जमीन उपजावू होगी अच्छी बारी" ा होगी, चारों और फसल और अनाज, कोई भूखान होगा, कोई चोरी नहीं करेगा और वाटेगाव का विकास होगा इस उद्दे" ा से राणेजी बहादूर अपनी जान की बाजी लगाकर ि" ागांव की जोगणी तीन सौ लोगों की आँखों के सामने से तलवार की हिम्मत पर अपने गाँव लाकर गाँव को धार्मिक उत्सव मेला लगाने का मौका देता हैं लेकिन इसमें बापू खोत राणोजी का ि" ार उडाता है। तब से ि" ागांव के बापू खोत के साथ बाटेगाव की दु" मनी भुरु हुयी।

Qdhjk dk lkgl%& बरसात के दिनों में मजदूरी न मिलने से भूखा रहना पडता तब वे ि" ागांव के खेतो में अनाज की चोरी कर अपना पेट भरते। इसकी बापू खोत अंग्रेज प्रांताधिकारी से ि" ाकायत करता है। तब अंग्रेज सरकार सावळा मांग गुनहगार ठहराकर गाँव से हद्दपार कर बेळगांव में स्थानबध्द करती है। यह अन्याय केवल सावळा मांग तक सीमित नहीं रहता। ''हजारो मांगाना त्याग वनवास दिला हजारो पोराबाळांना त्यान नादार केल. वतनापेक्षा जातिलाच महत्व प्राप्त झाल. मांग हा लायक असूच भाकत नाही, असा नियम झाला. लायकी हा भाब्द मांग जातीपासून अलग करुन कैक मांगाना गावांपासुन, घरापासुन, पोराबाळांपासून अलग करुन टाकण्यात आल. मांग जातीतील झुंझार वृत्ती नमावी, नाही" ी व्हावी, त्यांनी लाचार व्हाव, हाच त्या कायद्याचा हेतु होता.''[02] कई सालों बाद वाटेगांव की जोगणी भगाने का प्रयास बापू खोत करता है। तब साहसी राणोजी मांग का उससे भी बढकर तेजतसार बहादूर लडका फकीरा अपने बाप की तलवार से ही बाप के खूनी का तलवार के

साथ हाथ तोडकर गांव की इज्जत और मान–सम्मान की रक्षा करता है। इस पराक्रम से भांकरराव पाटील और विशुपंत कुलकर्णी के साथ सारे गांव की जुबां पर फकीरा का ही नाम रहता है।,''फकीरा जबर माणूस! उसने खोत को पटखनी दी। मुठी के साथ तलवार छिनकर उस बिच्छु की नांगी तोड दी। खोत को नाकाम किया।''03 एक बार फिर वाटेगांव के मांग अंग्रेज प्रांताधिकारी की नजर में आये। वे मांग जाति के पुरुशों को अपराधी जमात के नामपर गांव घर परिवार से हद्दपार करते हैं। अपनी जान बचाने के लिए मांग छिपकर रहने लगते है। फकीरा को यह जाति व्यवस्था और अंग्रेजों द्वारा होनेवाला भाोशण सहा नहीं जाता। बगावत के लिए उसका खून खौल उठता है।

LokfHkekuh lRrq vkSj QdhjkW& कुमज गांव का सत्तु अपने पिता की मृत्यू के बाद अंग्रेजी सेना में भर्ती होता है। साहस और भाौर्य से बहुत नाम भी कमाता है। परंतु अंग्रेजी अधिकारियों द्वारा अपमान और गुलामों की जिंदगी उसके स्वाभिमान और स्वत्व को ठेंच पहुंचाती है। वह अंग्रेजी नौकरी को ठोकर मारकर गांव में मजदूरी कर जीवनयापन करता है। मथाजी चौघूले अपने खेत की लकडी उठाने के कारण एक गर्भवती महार स्त्री को बुरी तर लात–घूँसों से मारने लगता है तब सत्तू को यह अन्याय देखा नहीं जाता। वह चौघूले को रोकने की कोf" ı" ı करता है। पर चौघूला उस स्त्री की जात लेनेपर तुला है। तब सत्तू चौघूला पर कुल्हाडी से वार कर फरार होता है। पच्चास लोगों को साथ लेकर अंग्रेज सरकार और जमींदार साहुकारों द्वारा होनेवाला सामान्य जनता का भाोशण उसके खिलाफ संघर्श करता है। अंग्रेज सरकार उसे पकडने के लिए पाँच हजार रुपये का इनाम रखती है। इसी लालच में दादा पाटील और उमा चौघुले उसे धोखे से पकडकर बंदी बनाते है। तब स्वाभिमानी, अंग्रेजों का विरोधी और सामान्य जनता की पीडा दु:ख–दर्द को मिटानेवाले दोस्त सत्तु को छूडाने के लिए अपने पचास वीर–जवान साथियों के साथ दादा पाटील और उमा चौघुले से लडकर सत्तू को मुक्त कर दोस्ती निभाता है।

Ekgkekjh] vdky vkSj ekGokMh eB geykW& उपन्यास में महामारी और अकाल की भयानकता का बहुत ही दिल दहलानेवाला, करुण चित्रण हुआ है। जानलेवा महामारी और दाने–दाने के लिए तड़फानेवाला भयानक अकाल इन दो पाटों में दलित मांग–महार लोग पीसने लगे। केवल चार दिन में बीस लोगों की मौत होती है। कई दिनों से भूखे जिंदा लोगों में उन्हें उठाने और दफनाने की ताकद भी नहीं बची। मांग–महारों के दो सौ परिवार का कुत्तों की तरह मरना फकीरा से देखा नहीं जाता। सेठ, साहूकार जमींदार और मठों में अनाज के भंडार कई दिनों से सड रहे हैं और महार मांग पेड़–पौधों के पत्ते खाकर जी रहे हैं। उनके बच्चे रोटी–रोटी कहकर तड़फते हुए मर रहे हैं। क्या गुनाह है उनका? महार–मांगों का वं" ı इस महामारी और अकाल से बचेगा की नहीं बचेगा? ''वह महामारी अति उग्र रुप धारण कर इंच–इंच जमीन को व्यापकर आगे–आगे सरक रही थी और गाँव में महामारी फैते ही भरे–पुरे संसार जहाँ के वहाँ छोड़कर लोग बेबस दौड़ने लगते। जैसे उनके पीछे भयंकर आग लगी हो।

जो भागता नहीं, उसकी मौत निर्" चत होती। सौं में से सिर्फ दस ऐसे वैसे बच रहे थे। मरनेवालों को
दफनाने के लिए भी लोग नहीं बचते। परीवार के सबके सब लोग महामारी का भक्ष्य हो रहे थे।''[04]
फकीरा ऐसा होने नहीं देगा। वह आबा साहब पंत से सहायता मांगता है। लेकिन वे भी असहाय होकर
कहते हैं, 'कुछ भी करो लेकिन जिंदा रहो... तुम कुत्तों जैसा मरो मत यह दिन भी निकल जायेंगे।'
अपने लोगो की दुर्द" ा और मौत से बेचैन फकीरा फिर एक बार अपनी तलवार उठाता है। साधू, बळी,
मुरा, केरु, सावळुनाना, घमांडी, जायनु महार, केसू महार, सुकाना और भाना जैसे हिम्मतबाज लोगों को
लेकर माळवाडी के मठ में बंदीस्त अनाज पर रातों रात हमला कर महार और मांग बस्ती में अनाज का
ढेर लगाता है। इस अपराध के लिए फकीरा और उनके साथियों को गिरफ्तार किया जाता है; परंतु
विश्णुपंत कुलकर्णी की सहायता से सब बरी होते हैं।

vijkf/k tutkfr dkuu vkj [ktku ij geyk& अंग्रेज सरकार का चमचा और फकीरा और
वाटेगांव का बापू खोत की चुगली के कारण पुलिस पाटील भांकरराव का तबादला कर वहाँ बापू खोत
के दामाद रावसाहब पाटील की नियुक्ती होती है। उपर से मांग और महार जमात को गुनहगार करार
देते हुए अपराधीक जनजाति कानुन के तहत उन्हें दिन में तीन बार गाँव के पुलिस पाटील के सामने
उपस्थिती लगाना अनिवार्य किया। उनके घूमने पर पाबंदियाँ लगाई गई। आदे" ा न मानने पर तीन
महिने कैद की सजा का प्रावधान किया। किसी के अधिन न आनेवाला गबरा घोडे की पीठ पर टाँग
डालकर तुफानों पर सवार होनेवाला आजाद भोर फकीरा को यह कानून मांग और महारों के मूलभूत
मानविय अधिकार छिननेवाला लगता है। जब रात में परिवार और पत्नी के साथ सोये हुए फकीरा को
जानबुझकर रावसाहेब पाटील बाहर आकर हाजीरी लगाने को कहता है। तब अपमान की दहकती
ज्वाला की तरह फकीरा बाहर आकर रावसाहेब पाटील को जोरदार तमाचा मार कर उसके कान के
नीचे बिजली का करंट देता है। फिर क्या एक मांग ने पाटील को तमाचा मारना गांव का अपमान
समझकर सारे पाटील कुल्हाडी और तलवार लेकर मांग बस्ती की ओर दौड़ते हैं। पर फकीरा और
उसके साथियों की रोद्र ललकार सूनकर सबके सब भाग खडे होते हैं। फकीरा और उसके साथियों के
गांव छोडना पडता है। वह अंग्रेजी छावणी और खजाने पर हमला करने की तैयारी करता है।, ''बंदूक?
रहने दे बंदूक! कितनी गोलियाँ छोडेंगे वे? एक एक इन्सान दस–दस गोलियाँ खायेंगे! मरा हुआ भेड
आग को नहीं डरता रे कल मरने का, वही आज मरेंगे! पर जरा इन्सान की तरह और हिम्मत के साथ!
चलो।''[05] फकीरा की टोली बेडसगांव स्थित अंग्रेजों का पचास हजार का खजीना अपनी जान जोखिम
में डालकर लुटते हैं। खजीने से दो हिस्से गाँव की मांग और महार बस्ती में देकर बाकी रकम साथियों
में बाँट ली जाती है। इससे बौखलाई छावणी में बाँधकर उन्हें भयंकर यातनाएँ देती है। फकीरा छावणी
पर भी हमले का मन बनता है। वह साथियों से कहता है, ''मरेंगे, नेर्ला के पत्थरों में हमारी इज्जत,
हमारी संतान, और हमारी माँ कृश्णा को बंदी बनानेवालों की छावणी को चीर देंगे या मरेंगे, हम मरेंगे

पर यह इलाका (मुलूख) नहीं मरेगा, यह पर्वत नहीं मरेंगे, यह पेड़... यह मिटठी....इनको मृत्यू नहीं है।''[06] फकीरा बापू खोत, रावसाहब पाटील को पकडता है। भागते हुए पर्वत से गिरकर उनकी मौत होती है। विश्णुपंत के कहने पर अपने परिवार वालों को अंग्रेजी जुल्म से बचाने के लिए वह अपने साथियों के साथ अंग्रेजों के सामने हाजिर होता है।

d|yfeyk dj %& 'फकीरा' इस उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार अन्ना भाऊ साठे ने ऐसे सेठ साहुकार, जमिदार और अंग्रेजी सरकार के दमन, भोशण के छक्के छुडानेवाले तेज तरार तुफान के भौर्य–धैर्य, और साहस की कथा को इतनी प्रवाही गती से प्रस्तुत किया है कि जिसे पढकर कई बार पाठक के रोंगटे खडे होते हैं। इसमें सांस्कृतिक, राश्ट्रीय भावना, अंग्रेजी अन्याय के विरुध्द साहसी नायक, उसका सामाजिक बलिदान, हौताम्य, मैदानी खेल, और प्राचीन युध्दकला आदि का बहुत ही जिवंत चित्रण हुआ है। यहाँ गाँव और अपनी मिटठी पर अपनी जान कुर्बान करनेवाले राणोजी, फकीरा पिता–पुत्र और उनके जांबाज साथियों का मानवतायुक्त उदात्त भाव एक भौर्य गाथा को जन्म देता है। निर्भिड फकीरा अंत में जॉन साहब को कहता है, ''यह तलवार मेरे पुर्वजों को f" ावाजी राजाने दी इसे लेकर मेरा बाप खोत से लडा और मैं इसे लेकर आपसे लडा।''[07] उपन्यास का नायक फकीरा मांग और महार जाति की असहाय वेदना और दर्द को आवाज देता है। इसलिए डॉ. बाबुराव गुरव कहते हैं, ''फकीरा हा उपेक्षित दीन दलितांच्या स्वातंत्र्य लढयाचा वाङमयीन वेदच मानावा लागेल. समाजाच्या अंतर मनातील अस्मितेचे पेटते निखारे, विजे प्रमाणे कडाडनारी त्याची हत्यारे, थरकाप उडवणारी त्यांची जिद्द व भौर्य अण्णा भाऊ अत्यंत रसर" ीत पध्दतीने भाब्द–बध्द करतात.''[08] अंतः फकीरा की लडाई यह अन्याय–अत्याचार और सामाजिक विशमता के खिलाफ लडाई है। इन्सान और इन्सानियत को जिंदा रखने की लडाई है। स्वत्व, स्वाभिमान और अस्मिता को बरकरार रखने की लडाई है। इसलिए खजीना लुटते समय फकीरा रघुनाथ ब्राह्मण की पत्नी को कहता है, ''माँ खजिना लेने आया हूँ, तुम्हारी इज्जत लुटने नहीं आया, क्यों कि इज्जत खाकर भूखे लोग जी नहीं सकते।''[09]

lnHk lwph&

01) दलित दस्तक, दुनिया की 27 भाशाओं में छपनेवाले महान साहित्यकार थे अण्णा भाऊ साठे, अ" ोक दास, 01 अगस्त 2019 जयंती वि" ोश, प्रमुख खबर

02) साहित्यरत्न लोक" ाहीर अण्णा भाऊ साठे निवडक वाङमय (कादंबरी खंड–1), डॉ. राजेंद्र कुंभार, साहित्यरत्न लोक" ाहीर अण्णा भाऊ साठे चरित्र साधने प्रका" ान समिती, महाराश्ट्र भाासन, में 2017, पृश्ठ–231

03) वही, पृश्ठ–242

04) वही, पृश्ठ–272

05) वही, पृश्ठ–301

06) वही, पृश्ठ–318

07) वही, पृश्ठ–332

08) तरुण भारत, लोक" ाहीर अण्णा भाऊ साठे जन्म" ताब्दी वि" ोश पुरवणी, डॉ. बळीराम गायकवाड, 01 अगस्त 2019

09) साहित्यरत्न लोक" ाहीर अण्णा भाऊ साठे, निवडक वाङमय (कादंबरी खंड–1), डॉ. राजेंद्र कुंभार, साहित्यरत्न लोक" ाहीर अण्णा भाऊ साठे चरित्र साधने प्रका" ान समिती, महाराश्ट्र भाासन, मे 2017, पृश्ठ–310